करथन। गर्मी मा ये गड्डा ल येखरे बर खोद लेथन कि यदि भुँईया मा कोई जीव हर जोनहर हानि पहुंचाथे होही तेहर मर जाये ओखर बाद मा ऐमे के हर गड्डा मा 2–3 किलो गोबर के पक्का खातु अऊ कम्पोस्ट खातु अऊ 500 गिराम नीम के खली ल डाल देथन। सावन (जुलाई) महिना मा 2–3 बार जबरदस्त पानी हर गिर जाथे अऊ भुँईया हर पानी से पुरा भर जाथे तेखर बाद मा नर्सरी मा तियार करे गिलोय के पौधामन ल ऐ गड्डा मन मा भेजे के बिवस्था ल कर देथन। पानी गिरे वाला महिना मा ये बात ल धियान मा रखथन कि पौधामन मा के पास झन पानी जमा होये।

आरोहण के बिवस्था- गिलोय हर एक ठन नार होथे जेखरे बर येखर ढीक से बाड़े के खातिर आरोहण के बिवस्था करे बर जरूरी हावे। येखरच बर यदि ठीक के ठीक फेंसिंग्स करें हन त येखर नारमन ल फेसिंग्स मा चढ़ा सकथन। खेत मा अऊ आसपास नीम अऊ आने कई ठन रूक मा गिलोय के नार ल घलो चढ़ा सकथन। लेकिन यदि ऐसन कुछु बिवस्था निए त येखर बर सही ढंग मा झाड़ीमन ला लगा सकथन। सुख्खा डंठल खड़े कर सकथन अऊ कांटा समेत तारमन के मचान बनाके कर सकथन। जेखर ऊपर येखर नारमन ल चढ़ा देथन पानी गिरे के बाद मा एक महिना मा एक बार पानी ल देहे के बिवस्था ल जरूरी रखथन जेखर से पौधामन के बड़िया बड़त हो सके। पानी गिरे के महिना मा गिलोय के नारमन पान से पटा जाथे। बल्कि पान झरे के महिना मा पान हर हरदी रंग के होके गिर जाथे जियादा मात्रा मा ये हर भुरवा रंग के होथे। ये बीच मा येखर कच्चा फर हर पाक के लाली रंग के हो जाथे। जब ऐसन स्थिति आ जाथे (ठंडा महिना के आखिर मा) त येखर नारमन ल नीचे के एक फीट ऊँचा भाग छोड़के काट लेथन। ये काटे नारमन ला नान्हू–नान्हू भाग मा काट के सुखा लेथन अऊ पूरा तरह से सुखाके येला बोरामन मा भर लेथन।

दवाई ल इकट्ठा करेके समय मा-गिलोय के तने (काण्ड) ल इकट्ठा जनवरी से लेके मार्च के हर याने मांघ से फाल्गून मा करे बर बड़िया रथे। ये समय मा काण्ड हर पान ले रहित हो जाथे अऊ दवाई वाला चीज जियादा मात्रा मा उपलब्ध होथे। ये ला भुँईया ले एक फीट ऊपर मा कुछु तेज धार वाला औजार अऊ हंसिया से काटके जम्मों नारमन ल इकट्ठा कर लेथन। तना ल 1–2 इंच के नान्हू –नान्हू भागमन मा काटके सुखालेथन काटे पौधा के नीचु के भागमन मा आने वाला मानसून मा फिर से नारमन जागथे। जेखर से अगले बरस के फसल हर तियार हो जाथे। ये प्रक्रिया हर लगातार चलते रथे अऊ एक बार रोपित कर देने के बाद मा बड़ बरस तके फसल ला पा सकथन। ये बीच मा यदि कुछु पौधा हर सूख जाथे त ओखर स्थान मा नवा पौधा ल रूपाई कर सकथन। नारमन ल चढ़ाये बर बनाये गए ढांचा ल लगातार काम मा ला सकथन।

उपज के प्राप्ति- ठीक ढंग से गिलोय के खेती करे ले बड़िया फसल आऐ ले एक हेक्टेयर भुँईया ले गिलोय के अंदाजन 8 से 10 क्विंटल सुख्खा तना ला लेके ओला 20से 25 रूपया मा प्रति किलो के हिसाब मा बाजार भाव मा बेंचे ले अंदाजन रूपया 25,000 तके पा सकथन। स्थानीय आयुर्वेदिक दवाई बनाये के संगे–संग येला थोक मा दिल्ली, कोलकाता अऊ मुंबई के मंडिमन मा बेच सकथन। एक बार मा गिलोय ल रोपे ले कई बरस तके येहर खेती ले आमदनी मिलथे।

अनुवादक

आनन्द कुमार दास, आलोक कुमार थवाईत,
कु. रंजीता पटेल, श्रीमती शशिकिरण बर्वे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

गिलोय

[Tinospora cordifolia]

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
डाकघर – आर.एफ.आर.सी., मण्डला रोड
जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

पहिचान- गिलोय के वानस्पति नाम टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया हावे। येहर मेनी स्पर्मेसी कुल के पौधा होथे। येला कई ठन भाषा मा जैसन हिन्दी मा गिलोय ,गर्च, गुड़बेल, गुजराती मा ग्लो कन्नड मा अमरदावली तेलगू मा तिप्पतिदा, गोधुचि, तमिल मा सिंडिल कोडी आदि नाम मा जाने जाथे अऊ जम्मो भारतभर मा 1000 मी. के उँचाई तके पाये जाथे अऊ एहर बड़ काम के नार होथे। भारत बरस के संगे–संग श्रीलंका अऊ म्यांमार के बनमा अपन आप मिलथे अऊ येहर बड़के बरस के नार के काण्ड गुदा वाला हेाथे। जेखर शाखामन मा ले कईठन पतला–पतला जरी निकलके निचु के अंग लटके रथे। येखर लतामन मा (तना) मा पतला छिलका (त्वचा) होथे जोनला हटाये ले नीचु हरिया रंग के गुदालु भाग दिखाई देथे। येखर पान हर हृदयाकार ,पान के पत्तामन जैसन चिकना होथे। येखर लतामन मा मटर के दाने जैसन फर लागथे। जोन्हर पहिले तेा हरियारंग के होथे अऊ पाके के बाद मा लाली रंग के हो जाथे। पानी गिरे के महिना अंदाजन जम्मो पान हर येखर आ जाथे। लेकिन ठंडा मा पानी हर हरदी रंग के होके झर जाथे। दवाई बनाई बर येखर कांदा अऊ तना हर हि मुख्य काम मा आथे। हालाकि येखर पान हर घलो सबले बड़िया दवाई वाला चीज होथे। लेकिन जियादा मात्रा येखर नार के सुख्खा रूप मा काम मा आथे। येला कच्चा अवस्था मा काम लाये ले जियादा लाभवाला मानथन कुछु घलो गिलोय हर दवाई बनाए बर काम आथे। बल्कि नीम के रूक मा चड़े गिलोय के नार ल आने पौधामन मा चढ़ाये ल बड़िया मानथन।

दवाई बनाये के येखर काम- अतका तके कि गिलोय के दवाई बनाये के काम के सवाल हावे ओहर गिलोय के ओ कुछु गिने–चुने दवाई वाला पौधा मन मा से होथे जोनमें त्रिदोषनाशक होऐ के गौरव पाऐ जाथे। ऐसन घलो मानथन कि गिलोय मधुरस अऊ घी के संग कफ ल, गुड़ के संग मलबध्दता ल, खाण्ड के संग पित्त बर, अरण्डी के तेल के संग मा हवा ल अऊ हवा के दोष बर, अऊ सोंठ के संग आमवात ल दूर भगाऐ बर करथन येखर संगे–संग येला मलरोधक, रसायन, बलकारक अऊ मीट्ठा अऊ प्रदीपन मा काम मा आथे। येहर छाती बर लाभकारी होवे के संगेसंग मधुमेह, खून के दोष, कामला, खॉसी, कोड़, खूनी बवासीर मा, बातरोगमा, काण्ड रोग, क्षयरोग, श्वेतप्रदर, गाठिया, रक्त बिकार, ऑखी के रोग आदि मन मा काम आथे। परम्परागत दवाई के काम मा गिलोय अऊ ब्राम्ही हर शंखपुष्पी के चुर्ण ल आंबरा के संग मा खून के चाप ल रोके बर काम मा आथे। गिलोय अऊ अश्वगंधा के जरी ल दूध मा बंधत्व ल दूर करेबर काम मा आथे। गिलोय मा जो तत्व हर होथे ओहर मुख्य मा–ग्लूकोसाइन, गिलोइन, गिलोइनिन, गिलोस्टेरॉल, बरबेरिन, टिनोस्पोरोसाइड अऊ टिनोस्पोरिन आदि हावे। ये प्रकार मा गिलोय के दवाई बनाये के गुन ल जानके अऊ येखर खेती ल बढ़ावा देले मानव शरीर बर अऊ संगे–संग बाजारमन मा येखर काम ल देखत घलो येहर बढ़िया काम वाला साबित होथे येहर बड़ मात्रा मा बनमन मा ही मिलथे लेकिन येखर दवाई अऊ बाजार मा येखर काम ल देखत घलो येला धियान मा रखथन कि येखर खेती बाड़ी बर अऊ संरक्षण ल बढ़ाये बर जियादा समय देहे बर जरूरी हावे।

खेती के तरिका- गिलोय हर एक ठन बड़का बरस के नार वाला पौधा होथे जेखर हर भाग, जरी, पान, फर अऊ तना हर घलो काम मा आथे बल्कि येखर बाजार भाव ला देखत घलो येखर नार (बेल) के मांग हर जोन्हर बाजार मन मा सुख्खा रूपमा पाये जाथे। एक बार लगा देहेले येहर हर बरस (यदि येखर बिवस्था ल सही ढंग मा करथन) मा येहर फसल देत रथे। येखर खेत ल विशेषकर बंजर भुँईया मा सुख्खा भुँईया मा करथन

येखर द्वारा येखर खेती वानिकी मा सफलता पा सकथन। जोनमें येखर नारमन (बेलों) ल सजाये के पहिले से विवस्था ल करके अऊ नार के सजाये बर अऊ खर्चा झन बैठे येला देखत ऐसन जगह मन मा येखर खेती हर विशेष फायदा वाला साबित हो सकथे। येखर खेती निचु मा देहे के तरिका के आधारमा कर सकथन।

जलवायु- गिलोय हर एक ठन ऐसन पौधा (नार) होथे जोन्हर भारत भर मा सब जगह मा पाये जाथे। येला देखत घलो जम्मो देश के जलवायु मा उगा सकथन। बल्कि येला ठीक से बाड़े बर गरम अऊ आर्द्र जलवायु जियादा बड़िया रथे।

भुँइया- गिलोय हर एकदम कठोर प्रवृत्ति के नार होथे जोनहर अंदाजन सब माटी जैसन कुधरा माटी मा अऊ करिया कपासिया मा उगासकथन। वैसे ये हरथोड़कन कपासिया अऊ लाली माटी मा येहर बड़ जियादा बड़िया ढंग मा उगथे। बल्कि ओ भुँईया मा जोनमे बड़ जियादा जीवांश होथे अऊ जल निकासी के अच्छा बिवस्था होथे ओहर बड़िया रथे।

बिजाई के तरिका- गिलोय के बीजाई बर येखर बीजामन मा अऊ कलम (कटिंग्स) द्वारा घलो कर सकथन। वैसन बड़का ढंग से येखर कलम ल काम मा लाथन जोन्हर पौधामन के तेजी से बाड़ेबर बड़ बड़िया रथे। अऊ उत्पादन घलो जबरदस्त होथे। येखर खातिर पुराना नारमन के कलम ल रख लेथन बिजाई बर काम मा लाये बर कलम के लंबाई हर 20 से 30 से.मी. तके के होथे अऊ येखर मोटाई हाथ के अंगुठा ला पतली अऊ नान्हू अंगुली से मोटा रखथन। हर कलममा कम से कम दूठी ऑखी (नोड) हर जरूरी रथे। येहर अक्सर बन के रूक मा चढ़े नारमन मा पा सकथन।

रोपणी मा पौधा ल तियार करथन- कलम (कटिंग्स) ल लेके ओखर बाद मा ओला रोपणी मा तियार करेबर माटी अऊ खातु मिलाये पना के झोला मा रोपित कर देथन। कलम मन मा जल्दी जरी निकले येखर बर रूटिंग्स हार्मोंस ल काम ला सकथन जैसे –रूटेक्स अऊ बी सिराडिक्स आदि। पना के झोला मा रोपे ये कलम मन मा अंदाजन आठ सप्ताह मा जरी आये के शुरू हो जाथे अऊ येमे नवा पान आ जाथे अऊ कल्ला हर निकल आथे। जब येहर अंदाजन दस सप्ताह के हो जाथे त येला मुख्य खेत मा रूपाई कर देथन।

खेती के तियारी - गिलोय हर एक ठन नार होथे। येखरे च बर येखर खेती करे से पहिले येखर सजाये संवारे के बिवस्था ल प्रबंध कर लेथन। किसान मन येखर खेती ल मेढ़ मन मा अऊ ओ जगह मा जियादा करथे जोनमा–नीम, आमा आदि हर पहिले से जागे रथे कर सकथन। येखर खेती ल अंगूर के खेती जैसन आरोहण बिवस्था बनाके घलो कर सकथन। लकीर अऊ लकीर के बीच मा दुरिया ल 1.5–2 मीटर अऊ पौधा ले पौधा के बीच के दुरिया ल 50 से.मी. रखथन। गिलोय के खेती करे से पहिले खेत मा चैत–बैशाख (अप्रैल–मई) महिना मा 30 गुना 30 गुना 30 से.मी. के गड्डा खोद के